वैशेषिक दर्शन में समवाय तथा समवाय एवं संयोग में अंतर

वैशेषिक दर्शन में दो प्रकार के सम्बन्ध माने गये हैं– समवाय और संयोग। समवाय एक नित्य सम्बन्ध है। समवाय का सम्बन्ध आन्तरिक होता है। इससे बाह्य वस्तुएँ सम्बन्धित नहीं होती। गुलाब के रंगों का गुलाब के फूल के साथ जो सम्बन्ध है वह समवाय का सम्बन्ध कहलाता है। इस प्रकार के आन्तरिक सम्बन्ध में एक पद को दूसरे पद से अलग नहीं किया जा सकता।

इसके ठीक विपरीत संयोग का सम्बन्ध है जो अनित्य है। इसमें दो बाह्य वस्तुओं का सम्बन्ध आपस में होता है। जैसे वृक्ष पर एक पक्षी आकर बैठता है इस प्रकार वृक्ष और पक्षी के बीच एक प्रकार का सम्बन्ध स्थापित हो जाता है जो संयोग का सम्बन्ध कहलाता है। संयोग के सम्बन्ध के लिए कर्म आवश्यक है। यह सम्बन्ध स्थायी नहीं होता।

समवाय तथा संयोग में अन्तर : समवाय तथा संयोग में निम्नलिखित अन्तर है–

1. संयोग को वैशेषिक दर्शन में गुण के रूप में माना गया है। अत: यह पदार्थ के रूप में नहीं समझा जा सकता। किन्तु समवाय को वैशेषिक दर्शन में एक पदार्थ माना गया है।
2. संयोग वाह्य सम्बन्ध है जब कि समवाय एक प्रकार का आन्तरिक सम्बन्ध है। पिता और पुत्र में जो सम्बन्ध है, वह वाह्य है तथा राम और राम के अंगों में जो सम्बन्ध है वह आन्तरिक सम्बन्ध है। इस प्रकार के आन्तरिक सम्बन्ध में एक पद को दूसरे पद से विलग नहीं किया जा सकता। परन्तु वाह्य सम्बन्ध में एक पद दूसरे पद से अलग होता है।
3. संयोग एक प्रकार का आगन्तुक सम्बन्ध (Accidental relation) है, किन्तु समवाय का सम्बन्ध आवश्यक सम्बन्ध (Essential relation) है। वृक्ष और पक्षी का सम्बन्ध संयोग का सम्बन्ध है। दूध और तरलता का सम्बन्ध स्वाभाविक है।
4. संयोग क्षणिक सम्बन्ध है परन्तु समवाय स्थायी सम्बन्ध है। कलम और हमारे हाथ में सम्बन्ध स्थापित हो रहा है वह संयोग का है। कुछ काल के बाद यह सम्बन्ध तोड़ा जा सकता है। अत: इस सम्बन्ध का आरम्भ और अन्त सम्भव है। किन्तु समवाय शाश्वत सम्बन्ध होता है। जिन वस्तुओं में समवाय का सम्बन्ध है, उन्हें क्षणमात्र के लिए भी एक दूसरे से पृथक नहीं किया जा सकता। मनुष्य से मनुष्यत्व को अल्पकाल के लिए भी नहीं हटाया जा सकता है।
5. संयोग का सम्बन्ध कर्म के द्वारा स्थापित होता है। यह सम्बन्ध तभी सम्भव है जब दो पदों में दोनों या एक क्रियाशील हों। समवाय के सम्बन्ध के लिए क्रियाशीलता की आवश्यकता नहीं होती। मनुष्य और मनुष्यत्व के बीच सम्बन्ध स्थापना में किसी प्रकार की क्रिया की आवश्यकता नहीं पड़ती।
6. संयोग में जिन सत्ताओं का सम्बन्ध होता है उन्हें उलट कर रखा जा सकता है, किन्तु ऐसी बात समवाय के साथ नहीं। यह नहीं कहा जा सकता कि द्रव्य गुण में समवेत है या सुगन्ध में गुलाब निहित है।
7. समवाय सम्बन्ध एक प्रकार का है, परन्तु संयोग सम्बन्ध तीन प्रकार के हैं।

डॉ. श्रवण कुमार मोदी
सहायक प्राध्यापक, दर्शनशास्त्र विभाग
शिवदेनी राम अयोध्या प्रसाद महाविद्यालय
बारा चकिया,पूर्वी चम्पारण
मो0–9608685335
Email Id- shrawankumarmodi1973@gmail.com